प्रक्षाल एवं पूजन विधि

पूजा करने वाले श्रावक को स्नान कर शुद्ध धुले हुए वस्त्र पहिनना चाहिये, धोती और दुपट्टा अलग अलग होना चाहिये। पूजा के समय दुपट्टा सिर पर ओढ़ना चाहिये, जहाँ तक हो सके पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके पूजन आदि शुभ कार्य करने चाहिये। सामग्री के आठ द्रव्यों में से चाँवल साफ किये हुये होने चाहिये, जल, चंदन छने हुये पवित्र जल के दो कलशों में भरकर एक में केसर घिसी हुई मिला देना चाहिये शेष सामग्री को पवित्र छने हुये जल से धोकर एक थाल में क्रमशः रखना चाहिये। केसर घिसते समय करीब आधे चाँवल और आधी गिरी को केसर में रंग लेना चाहिये। रंगे चाँवल, पुष्प एवं रंगी गिरी, दीपक के स्थान पर चढ़ाना चाहिये। अर्घ ऊपर लिखे आठों द्रव्यों के मिलने पर बनता है। इसके पश्चात पूजा के पात्र दो थाल, चम्मच, रकेबी, ठोणा, धुपायन, कलश लेना चाहिये।

पूजा स्थापना

९ पुष्प (पीले चाँवल)दोनों हाथों में लेकर क्षेपण करना चाहिए

ॐ ह्रीं.....॥ अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं.....॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं.....॥ अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्

पूजा सामग्री (अष्टद्रव्य) एवं चढ़ाने की विधि

1. जल	ॐ ह्रीं.... जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा ।(झारी से जल चढ़ावें)
2. चन्दन जल	ॐ ह्रीं....संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।(अनामिका अंगुलि से चन्दन चढ़ावें)
3. अक्षत (सफेद चाँवल)	ॐ ह्रीं.... अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्व. स्वाहा ।(बंधी मुट्ठी से अक्षत चढ़ावें)
4. पुष्प (पीले चाँवल)	ॐ ह्रीं.... कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।(दोनों हाथों से पुष्प चढ़ावें)
5. नैवेद्य (सफेद खोपरा चिटकी)	ॐ ह्रीं.... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।(रकेबी से नैवेद्य चढ़ावें)
6. दीपं (पीले खोपरा चिटकी)	ॐ ह्रीं.... मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।(आरती उतारें)
7. धूप	ॐ ह्रीं.... अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।(अग्नि में धूप खेवें)
8. फल (बादाम, लौंग, छुआरा)	ॐ ह्रीं.... मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।(रकेबी से फल चढ़ावें)
9. अर्घ (सभी को मिलाकर)	ॐ ह्रीं.... अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।(रकेबी से अर्घ चढ़ावें)
10. विसर्जन	तीन पुष्प (पीले चाँवल से)
11. शान्ति धारा	कलश से